हिमाचल प्रदेश सरकार

गरीबों का वरदान बकरी

पशु पालन विभाग, हिमाचल प्रदेश

DEPARTMENT OF ANIMAL HUSBANDRY, H.P.

पशु पालन विभाग

हिमाचल प्रदेश, शिमला-5

टोल- फ्री दूरभाष (1800-180-8006)

भारतीय परिवेश में बकरी पालन दूध व मांस दोनो के लिए किया जाता है, जहां तक बकरियों की संख्या की बात करें तो लगभग 170 मिलियन बकरियां भारतीय परिवेश में उपलब्ध है। भारत में कुल मांस के खपत का 32 प्रतिशत केवल बकरी के मांस से प्राप्त होता है। आज हमारे देश की जनसंख्या दिन व दिन बढ़ती जा रही है, ऐसे में हमारे सामने खाद्य समस्या उभर कर आ रही है, जबकि भारतीय परिवेश में ज्यादातर बकरी पालन गरीब किसानों के द्वारा किया जा रहा है। कई तरीकों से बकरी पालन गाय व भैंस पालन में काफी आसान है। बकरियां मुख्य रूप से कठोर परत वाले बीजों को फैलाने का अच्छा स्त्रोत है। ये बीज आंत से निकलने के पश्चात् नरम हो जाते हैं तथा अन्य बीजों के अपेक्षा आसानी से अंकुरित हो जाते हैं। बकरियों को गर्मियों में ऊपरी क्षेत्रों तथा ठण्ड के दिनों में नीचे की पहाड़ियों पर रखा जाता है। मैदानी भाग में इसका पालन- पोषण गरीब लोगों के द्वारा 3 से 5 बकरी के समूह में किया जाता है शहरों में इन्हें मुख्यत: स्टाल फीड़िंग पर रखा जाता है।

बकरियों का रखरखाव:

बकरियों को खुले स्थान पर रखना उचित है ये बंद स्थानों पर असहज महसूस करती है। ग्रामीण इलाकों में बकरी को केवल जंगली जानवर तथा प्रतिकूल मौसम से बचा के रखते हैं। इसको कोई विशेष आवास की आवश्यक्ता नहीं होती है। जबकि फार्मों तथा शहरों में इसके विशेष आवास की आवश्यक्ता होती है। एक जोड़ी बकरी के लिए पेन का आकार 5 मीटर लंबा 2 1/2 मीटर चौड़ा तथा 6 मीटर ऊँचा होता है। इस तरह के कई सारे पेन बकरियों की संख्या के अनुसार बनाए जाते हैं। जबकि दूध देने वाली बकरियों के बच्चे के लिए बकरी तथा गाय को बराबर पोषण पर रखा जाये तो बकरी अधिक दुग्ध उत्पादन करती है दूध उत्पादन के लिए पोष्टिक बदलाव क्षमता गाय में 38 प्रतिशत जबकि बकरी में 49 से 71 प्रतिशत तक पाया जाता है। मांस उत्पादन करने वाली बकरी को उसके भार का तीन से चार प्रतिशत खुष्क पदार्थ खाने में देना चाहिए, जबकि डेयरी वाली बकरी को उसके भारे से 3 से 7 प्रतिशत तक खुष्क पदार्थ देना चाहिए। ऊर्जा के लिए उच्च गुणवालो रकज खाने में देना चाहिए जैसा कि स्टाल फीडिंग बकरी को इसकी मूल आवश्यक्ता से 25 प्रतिशत ज्यादा तथा पहाड़ी बकरी को इसकी मूल आवश्यक्ता से 50 प्रतिशत ज्यादा ऊर्जा मिल सके। मूल रूप से प्रोटीन की आवश्यक्ता बकरी में भेड़ व गाय के बराबर होती है। कम से कम 6 प्रतिशत कुल प्रोटीन बकरी को दी जानी

चाहिए। अन्यथा वह भोजन ग्रहण करना कम कर देगी। जिसकी वजह से ऊर्जा व वसा के कणों से छोटे होने के कारण इसका दूध अधिक सुपाच्य हो जाता है। अन्य जानवरों की तुलना में इसके दूध में एलर्जी न के बराबर पायी जाती है तथा इसका दूध औषधीय गुण युक्त होता है, बकरी का दूध आवश्यक्ता के अनुसार निकाला जा सकता है। इसके दूध में मिनरल की मात्रा गाय के दूध से ज्यादा पायी जाती है क्योंकि इसमें कैल्शियम , फासफोरस व क्लोरीन की मात्रा अधिक होती है जबकि लौह की मात्रा कम पायी जाती है, बकरी का मांस सामान्य रूप में चीवान कहा जाता है। बकरी मांस का एक अच्छा स्त्रोत है जबकि उत्तम गुण वाला मांस इसके 6 से 12 महीने तक उम्र वाले बकरे तथा बकरियों में पाया जाता है। भारतीय परिवेश में इसकी कुल 20 प्रजातियां पायी जाती है। पहाड़ी क्षेत्रें में पाली जाने वाली बकरी की प्रजाति जैसे गद्दी लगभग 10 कि.ग्राम भार लेकर चढ़ाई पर जा सकती है। यह रोजगार तथा आय का महत्वपूर्ण स्त्रोत है, आकार में छोटी होने के कारण इसका मांस एक परिवार के लिए पर्याप्त होता है। पहाड़ी क्षेत्र जैसे जम्मू-कश्मीर हिमाचल प्रदेश में बकरी 200 से 500 के समूह में पाली जाती है। इन्हें गर्मी के दिनों में ऊँचे पहाड़ी एक अलग से पेन इसके मां के पेन के बगल में होना चाहिए। बकरे का आवास दूध देने वाली बकरी के आवास से दूर होना चाहिए। आवास इस तरह का होना चाहिए जिसमें अधिकतम हवा, धूप तथा बहाव अच्छा होना चाहिए। छत अग्निरोधक गुण वाली तथा अन्य की तुलना में ठण्डी होती है। इस आवास की ऊँचाई 3 से 5 मीटर तथा लंबाई व चौड़ाई बकरियों की लंबाई व चौड़ाई के अनुसार सामान्यत: गर्म प्रदेशों में 3 से 5 मीटर होती है। गर्म प्रदेशों में आवास की दिशा पूर्व-पश्चिम होनी चाहिए। बकरियां जो गाभिन हो उन्हें अलग आवास में सात दिन बच्चे देने से पहले रखना चाहिए। बकरों को 10 से 15 के समूह में रखना चाहिए। बीमार बकरे तथा बकरियों के लिए एक अलग से आवास की व्यवस्था होनी चाहिए, जो अन्य आवासों से दूर तथा अलग हो। आवास की बाहरी दीवार सफेद व आन्तरिक रंगीन होनी चाहिए। आवास में खाने तथा पीने को पानी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

बकरियों का पोषण:

बकरियों में विषाक्त निरोधक क्षमता अन्य जानवरों की तुलना में अधिक पायी जाती है ऐसा देखा गया है कि प्रोटीन दानों की कमी के फलस्वरूप रूमन की क्रियाएं घटने लगेगी जिससे खाद्य का उपभोग भी घटने लगेगा। इसके साथ ही मिनरल उचित मात्रा में मिलाकर दी जानी चाहिए, बच्चे के पोषण के लिए उसके एक घंटे जन्म के बाद कोलेस्ट्रम दिया जाना चाहिए। इसके पश्चात् फीडिंग रिपलेसर देना चाहिए। दिनभर में कम से कम दो बार फीड देना चाहिए। गर्भावस्था के दौरान बकरी को लगभग 400 से 500 ग्राम लेगुमिनस चारा व सांद्र मिश्रण अधिक देना चाहिए तथा बकरे को प्रजनन ऋतु में 400 से 900 ग्राम सांद्र मिश्रण अधिक देना चाहिए। प्रजनन ऋतु के अलावा इसे सामान्य सांद्र मिश्रण पर रखा जा सकता है।

सामान्य रखरखाव

- बकरियां आसानी से खाने तथा दूध के लिए बुलाने पर आ जाती है।
- मांस उत्पादन के लिए बकरों का 2 से 4 सप्ताह की उम्र पर बधियाकरण करना चाहिए।
- सींग जहां तक संभव हो हटा देना चाहिए, जिससे अन्य बकरियों को नुकसान न पहुंचे।
- इनके खुर जल्दी बड़े हो जाते हैं अत: समय-समय पर इनकी देखभाल करते रहना चाहिए।
- बकरी फार्म हमेशा बाजार के निकट होना चाहिए।

पशुपालन विभाग हि०प्र० द्वारा चलाई जा रही बकरी विकास योजनाएं

राष्ट्रीय पशुधन मिशन के अन्तर्गत ग्रामीण आँगनबाडी बकरी पालन विकास योजना

उद्देश्य:- पशुओं की अकस्मात मृत्यु होने पर हानि की भरपाई सुनिश्चित करना ।

लाभार्थी:- सभी श्रेणीयों के बी०पी०एल० परिवारों से संबंधित किसान पात्र है। सभी लाभार्थियों को बकरी पालन में प्रशिक्षण/ जागरूकता अनिवार्य है।

योजना का प्रारूप:- इस योजना के अन्तर्गत भूमिहीन एंव लघु/सीमांत किसानों के लाभार्थियों को एक इकाई जिसमें 11 बकरियां (10 मादा + 1 नर) प्रदान की जा रही है, जिसके लिए केन्द का अंश 90 प्रतिशत, राज्य का अंश 5 प्रतिशत तथा लाभार्थी का अंश 5 प्रतिशत निर्धारित किया गया है। प्रत्येक बकरी इकाई (10+1) की किमत मु० 66,000/- रूपये होगी । पशु बीमा के प्रीमियम राशी का भुगतान सरकार द्वारा। प्रजनन काल के दौरान 3 माह के लिए मादा पशु के लिए दाना मिश्रण प्रबन्ध सरकार द्वारा।

कुल बजट 633.60 लाख रुपये

लाभार्थी 960

टोल- फ्री दूरभाष (1800-180-8006)

कृषक बकरी पालन योजना एंव भेड़ व प्रोत्साहन योजना

उद्देश्य:- बकरी पालकों की आय में वृद्धी करने के अवसर प्रदान करना तथा मास उत्पादन में बढ़ौतरी करना ।

पात्रता:- समस्त जाति वर्ग के ए०पी०एल० बकरी पालक ।

योजना का प्रारूप:- बकरी पालकों को 11 बकरियां (10मादा, 1 नर), 5 बकरियां (4 मादा, 1 नर) एंव 3 बकरियां (2मादा,1नर) बकरी इकाईयां 60 प्रतिशत अनुदान पर प्रदान की जायेगी । जिसका ब्यौरा निम्नलिखित है :-

1. मु० 5,000 (प्रत्येक बकरी) लाभार्थी अंश मु० 2,000 तथा मु० 3,000 अनुदान ।
2. बकरा 8,000 (प्रत्येक लाभार्थी अंश मु० 3200 तथा मु० 4800 अनुदान ।
3. पशु बीमा के प्रीमियम राशी का भुगतान सरकार द्वारा ।
4. प्रजनन काल के दौरान 3 माह के लिए मादा पशु के लिए दाना मिश्रण प्रबन्ध सरकार द्वारा प्रदान किया जाएगा ।

लाभार्थी अपना आवेदन पत्र नजदीक के पशु चिकित्सा संस्थान से निर्धारित प्रपत्र प्राप्त करने के उपरांत आवेदन कर सकता है।

कुल बजट 314.00 लाख रुपये

लाभार्थी 1000

टोल- फ्री दूरभाष (1800-180-8006)

राजकीय मुद्रणालय, हि० प्र०-471-डी०ए०एच०/2020-19-9-2020-10,000